KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage, Campus, Mussallahpur,Patna - 06
Mob. : 8877918018, 8757354880

BPSC

संभावित निबंध

with Model Answer

By : Dharmendra Sir

के निर्देशन में

संभावित निबंध

क्रम. सं०	निबंध का नाम	पेज. सं०
1.	''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर करना''	03
2.	'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'	04
3.	''जहाँ चाह, वहाँ राह''	05
4.	कर्म करें, फल की चिंता न करे।	06
5.	''नारी का सौंदर्य आभूषणों से नहीं, सौम्य गुणों से होता है।''	07
6.	अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत	08
7.	छप्पर मरम्मत करने का समय तभी होता है, जब धूप खिली हुई हो। (The time to repair the roff is when the sun is shining.)	09-10
8.	आप उसी नदी में दोबारा नहीं उतर सकते। (You cannot step twice in the same river)	11-12
9.	हर असंमजस के लिए मुस्कराहट ही चुनिंदा साधन है। (A smile is the chosen vehical for all ambiguities)	13-14
10.	'केवल इसलिए कि आपके पास विकल्प है, इसका अर्थ कदापि नहीं कि उनमें से किसी को भी ठीक होना ही होगा' (Just because you have a choice, it does not mean that any of them has to be right.)	15-16
11.	आर्थिक समृद्धि हासिल करने में वन सर्वोत्तम प्रतिमान होते हैं। (Forest are the best case studies for economic excellence.)	17-18
12.	कवि संसार के अनधिकृत रूप से मान्य विधायक होते हैं। (Poets are the unacknowledged legislators of the world.)	19-20
13.	इतिहास वैज्ञानिक मनुष्य के रुमानी मनुष्य पर विजय हासिल करने का एक सिलसिला है।' (History won is a series of victories won by the scientific man over the romantic man)	21-22
14.	जहाज बंदरगाह के भीतर सुरक्षित होता है, परंतु इसके लिए तो वह होता नहीं है। (A ship in harbor is safe, but that is not what ships are built for)	23-24

1. ''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर करना''

बचपन से ही हम इकबाल के इन संदेशों/गीतों को सुनते आए हैं कि - 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना'

जो कि सभी धर्मो/मजहबों की एक उदार और सहिष्णु छवि को बताता है तथा यह दर्शाता है. कि धर्म समाजों के मध्य परस्पर भाईचारे व प्रेम को बढ़ाता है।

परंतु वर्तमान में हो रहे दंगो, साम्प्रदायिक घटनाओं (गोधरा, कश्मीर दंगे, असम दंगे, करौली दंगे), आतंकवादी हमलों (अमेरिका का ट्विन टॉवर हमला, न्यूजीलैण्ड हमला, मुंबई हमला, खालिस्तानी मुद्दा) आदि को देखकर प्राय: यही तंज कसा जाता है कि- "मजहब नहीं सिखता है आपस में बैर करना''

उपयुक्त परिदृश्य को देखकर मन में सवाल आता है कि धर्म का वास्तविक रूप कौनसा है? यह समाज में क्या भूमिका निभाता है? और समाज में धर्म का होना आवश्यक क्यों? क्या इससे कुछ खतरे भी उत्पन्न हुए हैं?

इन सवालों का जवाब हम इस निबंध में ढूंढेंगे ।

मजहब का अर्थ है- धर्म, मत या सम्प्रदाय । शाब्दिक अर्थों में ईश्वर, पैगम्बर भगवान, आदि के प्रति श्रद्धा या विश्वास पर आधारित धारणात्मक प्रक्रिया ही धर्म है।

मनुष्य के नैतिक विकास में, समाज के प्रति उसके दायित्व के निर्धारण में व मानवता के विकास मे धर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उसने उन मानदण्डो, कसौटियों को तय किया जिसके तहत मनुष्य को सभ्य बनाया जा सके।

उदाहरणार्थ सभी धर्मो में समानता, जीव मात्र के प्रति दया, बंधुत्व यथा **'सर्वधर्मसमभाव', 'बहुजन-हिताय, सरबत दा भला'** जैसे मूल्यों का समावेशन मिलता है। इसी मजहब के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इकबाल ने कहा है कि-

हमने यह माना कि मजहब से जान है, इंसान की।
कुछ इसी के दम से कायम शान है, इंसान की॥

धर्म का दूसरा पहलू है प्रेम या यूँ कहे धर्म का आधार प्रेम ही है। सूफी संतो ने सांसारिक प्रेम व ईश्वर प्रेम में कोई अन्तर नहीं माना। भक्ति परम्परा के कवियों ने भी प्रेम को ही भक्ति माना। और सभी धर्मों को मूलरूप से देखने पर हम पाएंगे कि कोई ऐसा धर्म नहीं है जो दुश्मनी/बैर की महत्व देता हो। आदिम काल से वर्तमान तक के सफर में धर्म ने प्रेम व सद्भावना का विकास किया है। इसी संदर्भ में कबीर का भी मत है कि जो प्रेम नहीं कर सकता, वह धार्मिक नहीं हो सकता उनके अनुसार-

''यह तो घर है प्रेम का,
खाला का घर नाहि।
सीस उतारे भुईं धरे,
तब पैठे घर मांहि ।

इसी तरह धर्म बैर को नहीं अपितु परस्पर प्रेम को बढ़ाता है। समाज मे प्रेम बढ़ाने, सहिष्णुता बनाए रखने व विविधता को सुरक्षित रखने के लिए धर्म आवश्यक है क्योंकि यही सरल अर्थों मे मनुष्य को दिशानिर्देश प्रदान करता है। इन्हीं निर्देशों से प्रेरित होकर धार्मिक व्यक्ति सभी प्राणियों में उसी ईश्वर का निवास देखता है इसीलिए किसी से बैर न रखकर प्रेम करता है। तुलसीदास जी के शब्दों मे

''सियाराम मय सब जग जानी,
करहूं प्रणाम जोरि जग पानी ।''

हमने उपर्युक्त विश्लेषण से धर्म का महत्व, उसकी भूमिका व आवश्यकता को जाना। परंतु हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। हम आज धर्म के नाम पर होने वाले साम्प्रदायिक दंगो, आतंकवाद, असहिष्णुता की घटनाओं को अनदेखा नहीं कर सकते हैं। और तो और देश का विभाजन भी धर्म के आधार पर हुआ। साथ ही **आजादी के 75 वर्षो** के बाद भी धार्मिक दंगो की गूंज किसी न किसी स्वर में आए दिन सुनाई देती रहती है।

इसी संदर्भ में विश्लेषण करने पर हम पाएंगे कि सभी धर्मों के दो दृष्टिकोण होते हैं 'नैतिक दृष्टिकोण' व 'वर्तमान का दृष्टिकोण।'

धर्म का नैतिक दृष्टिकोण सभी धर्मों में परस्पर प्रेम, शांति, सद्भावना, सहयोग जैसे मूल्यों का समावेश करता है। वहीं धर्म का वर्तमान स्वरूप जो कि इसके बाह्य दृष्टिकोण (कर्मकाण्ड, अंध विश्वास) के दुरुपयोग से बना है।

लोग धर्म का अपने स्वार्थ के चलते राजनीतिक दुरुपयोग, हिंसा, साम्प्रदायिकता फैलाने में करते हैं। जिसके कारण यह प्रेम का जरिया न बनकर बैर/द्वेष का साधन बन जाता है। यहाँ कमी धर्म में न होकर उसके दुरुपयोग में है।

''एक जैसी दिखती थी माचिस की तीलियाँ
किसी ने दिए जलाए तो किसी ने घर''

अत: धर्म 'अफीम का नशा' न बने इसके लिए आवश्यक है कि इसका दुरुपयोग न हो व धर्म में नैतिकता का समावेशन बना रहे। जिस तरह आत्मा के शरीर में प्रवेश से मनुष्य में स्फूर्ति का संचार होता है वहीं नैतिकता युक्त धर्म से समाज में प्रेम का संचार संभव होगा। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में-

'धर्म ही हमारे राष्ट्र की जीवन शक्ति है।
यह शक्ति जब तक सुरक्षित है,
तब तक विश्व की कोई भी शक्ति
हमारे राष्ट्र को नष्ट नहीं कर सकती है।'

❑❑❑

2. 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'

प्रांजल पाटिल जब 6 साल की थी तो उनकी एक आँख एक हादसे में खराब हो गई थी। इस हादसे से उबरने से पहले ही उनकी दूसरी आँख की रोशनी भी चली गई थी। लेकिन नेत्रहीन होने के बावजूद भी उन्होंने कभी सपना देखना नहीं बंद किया। उन्होंने देश की सबसे कठिन परीक्षा को क्रेक करने का मन बनाया और तमाम कठिनाइओं के बावजूद अपनी मंजिल पाई और IAS अधिकारी बनकर दिखाया। यह उनके मनोबल अर्थात मन की शक्ति की ही जीत थी। तभी तो शंकराचार्य जी ने कहा है–

''जिसने मन को जीत लिया,
उसने जगत को जीत लिया।''

इस निबंध में हम मन के महत्व को जानेंगे। कैसे यह हमारे कार्यों के परिणाम का निर्धारण करता है? क्यों मनोबल का होना जरूरी है? किस तरह मनोबल ने विभिन्न व्यक्तियों को पहचान दी? मना की शक्ति को कैसे जागृत की जाए?

इन आयामों को जानने में हम सबसे पहले विचार करते हैं कि कैसे मन मनुष्य को प्रेरित करने में महत्व रखता है।

मनुष्य की समस्त जीवन प्रक्रिया का संचालन उसके मस्तिष्क द्वारा होता है। मन व मस्तिष्क प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं। मन में हम जिस प्रकार का विचार रखते है हमारे शरीर व मस्तिष्क भी उसी अनुरूप ढल जाता है। यथा यदि हमारे मन में निराशा या हीन भावना है तो हमारा शरीर भी शिथिल रहता है। वहीं आशावादी मन होने पर हमारे भीतर स्फूर्ति व सकारात्मकता का संचार रहता है। इसी मनस्थिति के बारे में कवि मैथलीशरण गुप्त ने कहा है–

''नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो''

इसी संदर्भ में हम आगे विचार करने पर पाएंगे कि जब हम मन में हार मान लेते है तो किसी कार्य को शुरू करने की व निरंतर प्रयास करने की कोशिश ही नहीं करते। वहीं अगर हम किसी कार्य को करने की मन मे ठान लेते है तो लाख मुश्किलें आने के बावजूद हम ऊर्जा के साथ निरंतर प्रयास करते रहते हैं और यही प्रयास हमें सफलता रूपी विजय प्रदान करता है। महात्मा गांधी ने इस मनोबल के कारण ही कभी किसी परिस्थिति में हार नहीं मानी । और इसी कोशिश के लिए कहा गया है–

''लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती''

इसी क्रम मे यह भी विचारणीय है कि मनुष्य की हार व जीत उसके मनोयोग पर ही आधारित होती है। कमजोर मानसिकता वाले लोग रस्सी को भी साँप समझकर भयभीत हो जाते हैं व हार मान लेते हैं, वहीं दृढ़ मनोयोग वाले व्यक्ति साँप को भी रस्सी जैसी मामूली वस्तु समझकर उसका सामना करते हैं व जीत हासिल करते हैं।

इसी मनशक्ति का उदाहरण हम महाभारत में भी देख सकते हैं। जब अर्जुन युद्ध करने से पहले चिंतन व डर में डूब गए थे तब श्रीकृष्ण ने ही उनके मनोबल को बढाया और इसी मनोबल के सहारे ही वे इस युद्ध मे वीरता के साथ लड़ सके। इस तरह हम कह सकते हैं कि जीवन में सफलता हेतु एक दृढ़ मनोबल जरूरी है। तभी तो मनुष्य जीवन में अनेक विविधता (सुख-दुख, आशा-निराशा, जय-पराजय) होने के बावजूद हर परिस्थिति एक सशक्त मन की आवश्यकता हर समय बनी रहती है क्योंकि

'जो भी परिस्थितियाँ मिलें,
काँटे चुभे कलियाँ खिलें,
हारे नहीं इंसान,
है संदेश का जीवन का यही।''

इसी संदर्भ में मन शक्ति के उदाहरण हमें विभिन्न महान व्यक्तित्व में देखने को मिलते है। महात्मा गांधी से लेकर नेल्सन मंडेला तक, सावित्री से लेकर मीरा तक, आइन्सटीन से लेकर अब्दुल कलाम तक, रानी झाँसी से लेकर इन्दिरा गांधी तक एक चीज जो सबमें समान मिलती हैं वह है इनका दृढ़ मनोबल । इसी मनोबल के सहारे इन्होंने सफलता को प्राप्त किया।

हमने मन के महत्व को तो जान लिया लेकिन यह भी जानना होगा कि मन में जीत की भावना लाई कैसे जाए? अर्थात् मन को सशक्त कैसे किया जाए?

इसके लिए आवश्यक है कि मन मे हीनता की भावना को खत्म करना। जब व्यक्ति यह सोचता है कि मैं अशक्त हूँ, कमजोर हूँ तब उसका मन भी कमजोर हो जाता है और वह किसी कार्य को शुरु ही नहीं कर पाता है। अत: मन में आई इसी हीनता को त्यागने की आवश्यकता है। एक बार मन को सशक्त कर लेने से हम अपने सपनों को साकार कर लेने में सक्षम हो सकेंगे। ऐसा होने पर हम जीवन पथ में अपने दृढ़ मानसिक संकल्प एवं प्रयास से कठिनाई एवं असफलता तथा विपरीत परिस्थितियों से उबरकर सफलता को शिरोधार्य कर सकते हैं। ग्रंथों में भी कहा गया है–

'दुख-सुख सब कहँ परत हैं,
पौरुष तजहूँ न मीत।
मन के हारे हार है,
मन के जीते जीत।।

इस संदर्भ में किसी शायर ने ठीक ही कहा है कि–

मुश्किलें दिल के इरादें आजमाती है।
स्वप्न के परदे निगाहों से हटाती है।।
हौसला मत हार वो मुसाफिर गिरके।
ठोकरें मनुष्य को चलना सिखाती हैं।

❑❑❑

3. ''जहाँ चाह, वहाँ राह''

''अगर किसी चीज को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने में लग जाती हैं।''

'ओम शांति ओम' चलचित्र का यह संवाद हमने कई बार सुना है परंतु इस पर विचार करें तो यह खुद में गहरे अर्थ को समेटे हुआ है। यह बताती है किस तरह हमारी चाह/इच्छाएँ, हर समस्या का हल प्रदान कर सकती है। इसीलिए तो **'जहाँ चाह, वहाँ राह'** की कहावत सार्थक होती है।

इस निबंध मे हम यही जानने का प्रयास करेंगे कि कैसे हमारी चाह/इच्छा कोई न कोई राह निकाल ही लेती है। कई उदाहरणों द्वारा इसे समझने के साथ-साथ यह भी जानेंगे कि कैसी इच्छाएँ जरूरी व कैसी नहीं।

इसी संदर्भ में विचार करने पर एक कथन जो सटीकता से इसकी व्याख्या करता है वह है ''आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है'' अर्थात हमारी चाह। आवश्यकता कोई न कोई राह/आविष्कार को पाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पहिए से लेकर रेलगाड़ी तक, छोटे से आश्रय से लेकर गगनचुंबी इमारतों तक, 5G से लेकर वर्तमान में AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) तक, रोबोटिक्स से लेकर मशीन लर्निंग तक, सभी के पीछे मनुष्य की चाह ही मुख्य कारण रही है। अर्थात मनुष्य अपनी चाह/इच्छा के अनुरूप विभिन्न हल निकाले। तथा यह प्रक्रिया श्री वर्तमान में भी अनवरत रूप से जारी है।

इस संबंध मे और मनन करने पर हम पाते हैं कि व्यक्ति की चाह उसको उद्देश्य प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। क्योंकि चाह होने पर वह उसके लिए निरन्तर प्रयत्न करता है तथा विभिन्न तरीकों पर विचार करता है। क्योंकि अंतत: मनुष्य की इच्छाशक्ति ही उसकी प्रगति का आधार होती है।

अपनी अदम्य चाह से प्रेरित होकर व्यक्ति एवरेस्ट के शिखर पर भी चढ़ सकता है तथा सागर तल की गहराइयों में गोते भी लगा सकता है।

उदाहरणतया स्वतंत्रता के समय सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को एकीकृत करने की चाह रखी। और इसी चाह के कारण विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने रियासतों के एकीकरण की राह निकाल ही ली।

इसी तरह अब्राहम लिंकन ने लगातार चुनावों में हार के बावजूद अपनी चाह नही छोड़ी। और बार - बार असफल होने बावजूद अपनी इसी चाह के कारण वे अमेरिका के राष्ट्रपति बनने में सफल हुए ।

इस तरह तीव्र चाह के कारण मनुष्य को कठिन कार्य सरल प्रतीत होने लगते हैं। अब्राहम लिंकन के ही शब्दों में–

'इस बात का हमेशा ख्याल रखें कि सिर्फ आपका संकल्प ही आपकी सफलता के लिए मायने रखता है, कोई और चीज नहीं।''

अर्थात जो व्यक्ति दृढ संकल्प (चाह) के साथ कार्य करता है वह सभी बाधाओं को पराजित करने व अपने लक्ष्य को पूरा करने का रास्ता खोज लेता है, वहीं किसी व्यक्ति के पास दृढ इच्छाशक्ति व संकल्प का अभाव हो वह तो वह जल्दी हार मान लेते है तथा छोटी सी समस्या आने पर प्रयत्न करना छोड़ देते हैं। लेकिन चाह वाला व्यक्ति बार-बार प्रयास करता रहता है और अंतत राह निकाल ही लेता है।

इस तरह हमने जाना कि हमारी इच्छाशक्ति हमारे उद्देश्य प्राप्ति में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारी इच्छाशक्ति को मजबूत बनाने में हमारे आत्मविश्वास, साहस, धैर्य जैसे गुणों की भी भूमिका महत्वपूर्ण है।

हमने यह तो जान लिया कि इच्छाशक्ति उद्देश्य प्राप्ति में महत्वपूर्ण है। लेकिन हमें यह भी जानना आवश्यक तक है कि हमारी चाह सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हो। अन्यथा इसका समाज पर विपरीत प्रभाव भी पड़ सकता है। वर्तमान में बढ़ता आतंकवाद, परमाणु बम ऐसी ही नकारत्मकता का परिणाम है।

निष्कर्षत: समग्र तौर पर हम पाते हैं कि मनुष्य की तीव्र चाह उसे अपनी दृढ-लक्ष्य प्राप्ति की राह पर अंतत: पहुंचा ही देती है। इसीलिए तो इच्छाशक्ति का होना आवश्यकता है। हमें बस इसी इच्छाशक्ति को पहचानने की आवश्यकता है इसी के द्वारा हम रास्ते की सभी कठिनाईयों को पार करते हुए अपनी मंजिल को पा लेंगे। अंग्रेजी की कहावत मे भी कहा गया है– "Where there is a will, There is a way."

❑❑❑

4. कर्म करें, फल की चिंता न करे।

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥''

श्रीमद्भगवद्गीता का यह प्रसिद्ध श्लोक कर्म की महत्ता को दृर्ाता है। यह बताता है कि हमें अपने कर्मों को बिना किसी फल की इच्छा किए निरंतर करते रहना चाहिए। भगवद्गीता का सार हो या दार्शनिक कांट का **'कर्त्तव्य के लिए कर्तव्य की अवधारणा'** हो; या कर्मयोग का अर्थ हो सभी बिना किसी फलासक्ति के निरंतर अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए कर्म करने की प्रेरणा देते हैं।

इस निबंध में हम कर्म की इसी अवधारणा के संबंधित विभिन्न जैसे की दृष्टिकोणों पर विचार करेंगे जैसे कि क्यों हमें कर्म करते समय फल की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। इच्छा के साथ कर्म करने के क्या परिणाम होंगे? क्या कुछ ऐसी भी स्थितियाँ है जहाँ हमें फल (परिणाम) के संबंध में उचित चिंतन करना चाहिए।

सर्वप्रथम हम यह जानने का प्रयास करेंगें कि क्यों हमें कर्म करते समय फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। जो व्यक्ति कर्म को अपना कर्तव्य समझकर करते हैं वे तनाव मुक्त रहते हैं तथा कार्य करने में अपना शत-प्रतिशत लगाते हैं। वहीं जो व्यक्ति कर्म करते समय भी फल की चिंता करते हैं वे प्राय: तनाव में रहते हैं क्योंकि उनका सम्पूर्ण ध्यान फल के ईर्द-गिर्द रहता है तथा फल न मिलने की निराशा या फलप्राप्ति के प्रति अतिउत्साह दोनों उसकी कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं।

इसके साथ ही यह जानना भी रोचक है **'कर्मप्रधानता'** का यह संदेश जितना आदिकाल में प्रासंगिक था उतना आज भी है वर्तमान समय में भी कर्म की महत्ता बनी हुई है। बहुत से लोग सिर्फ परिणाम की इच्छा व परिणाम के सुखद स्वप्न में लीन रहते हैं परंतु उसके लिए पर्याप्त कर्म नहीं करते। यथा प्रसिद्ध 'बिल्ली व मछली' की कहानी में बिल्ली मछली को खाना तो चाहती है परंतु अपने पैर गीला नहीं करना चाहती। जबकि वास्तव में हमे निरंतर कर्म करते रहना चाहिए। अंतत फल भी हमारे कर्मों पर ही निर्भर करता है। हमारे कर्म कैसे रहेंगे उसी पर परिणाम निर्धारित होगा अत: चिंतन-मनन फल की न करके कर्म करने की होनी चाहिए। तुलसीदास जी के शब्दों में–

''करम प्रधान विश्व रचि राखा।

जो जस करइ सो तस फल चाखा।''

इस तरह हमने बगैर फल के कर्म किए जाने का महत्व समझा। अभी यह जानेंगे कि फल की चिंता के साथ कर्म करने पर क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं।

यदि हम किसी फल की चिंता के साथ कर्म करते हैं तो उसमें निश्चित ही स्वार्थ का तत्व भी समाहित हो जाता है और कई बार व्यक्तिगत स्वार्थ को देखते हुए कर्म भी उसी के अनुरूप करते हैं। वहीं बिना किसी फल की चिंता किए, कर्म करने से समाज के प्रति दायित्व भी उचित रूप से पूरे होते हैं। यथा एक सिविल सेवक बिना किसी लाभ की आशा किए अपने कर्तव्यों को पूरा करता है तो इसका लाभ सम्पूर्ण समाज को मिलता है वहीं निजी लाभ की चिंता करके किया गया। कर्म प्राय: समाज के संदर्भ में संगत नही रहता है।

हरेक सिक्के के दो पहलू होते हैं । यह सही है कि हमें फल की चिंता किए बिना निरंतर कर्म करते रहना चाहिए। परंतु कुछ निर्णय करने से पहले उसके परिणाम के प्रति चिंतन करना भी आवश्यक होता है यथा कोई फल किसी के प्रति हानि तो नहीं देगा। अर्थात हमारे कर्म और कर्म का फल दोनो ही उचित होने चाहिए। इस संबंध में (फल) परिणाम का उचित विश्लेषण भी होना चाहिए।

महात्मा गांधी का 'साधन- साध्य की पवित्रता' का सिद्धान्त भी इसी दृष्टिकोण के महत्व को बताता है। जिसके तहत हमें हमारे कर्मों व उनके द्वारा प्राप्त फलों (परिणामों) का उचित विश्लेषण करना चाहिए। इसी तरह **मैक्यावेली, मार्क्स** इत्यादि ने परिणाम संबंधी पक्ष के चिंतन को भी महत्वपूर्ण माना है।

इस तरह हम सभी पक्षों पर विचार करें तो यह पाएंगे कि फल/परिणाम के संबंध में विश्लेषण करना उचित है परंतु एक बार निर्णय लेने के पश्चात हमें अपने कर्मों पर ध्यान देना चाहिए। परिणाम क्या रहेगा यह अंतत: हमारे कर्म ही निर्धारित करेंगे । अत: व्यर्थ रूप से फल की चिंता किए बिना अगर कर्म करेंगे तो सफलता की संभावना अधिक होगी। साथ ही किसी भी परिणाम (अच्छे बुरे) को सहृदय स्वीकारने की क्षमता भी होगी। तभी तो कहा गया है-

''चराति चरतो भग:'' अर्थात्

''चलने वाले का भाग्य चलता है।''

❑❑❑

5. ''नारी का सौंदर्य आभूषणों से नहीं, सौम्य गुणों से होता है।''

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के इस समतल में''

'कामायनी' की इन प्रसिद्ध पक्तियों में नारी के श्रद्धा व सौम्य स्वरूप को बतलाया गया है। यहाँ उसकी परिकल्पना

सौम्य गुण से युक्त सौंदर्य के साथ की गई है।

यूँ तो सौंदर्य का निश्चित माप-दण्ड या परिभाषा नहीं होती। सौंदर्य का अर्थ भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न- भिन्न हो सकता है। कुछ लोग सौंदर्य के बाह्य स्वरूप को महत्व देते हैं, वहीं कुछ लोग मानवीय गुणों अर्थात भावनात्मक व आंतरिक सौंदर्य को महत्व देते है। परंतु संकीर्णता से ऊपर उठकर देखें तो व्यक्तित्व के मूल्यांकन में बाहरी स्वरूप से अधिक गुणों को तरजीह दी जाती है।

इसी संदर्भ में हम देखें तो आदिकाल से ही हमें महिलाओं के आभूषण प्रयोग के उदाहरण मिलते हैं। आभूषण, अलंकरण इत्यादि नारी की सुंदरता को बढ़ाते हैं परंतु वास्तविक सुंदरता तो उसके गुणों में ही निहित होती है। क्योंकि आभूषण व अलंकरण द्वारा प्रदान की गई सुंदरता क्षणिक व नश्वर होती है, वहीं सौम्य गुण द्वारा प्रदान की सुंदरता शाश्वत रूप से बनी रहती है। गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में-

''हे नारी तुम ईश्वर का सृजन
मात्र नहीं मानव हृदय का सौंदर्य हो,
हमारी सहायिका हो तुम
केवल स्त्री नहीं हमारा स्वप्न हो''

नारी का सौंदर्य उसके सौम्य गुणों से है और ये सौम्य गुण हैं- **दया, ममता, त्याग, संवेदनशीलता, सहनशीलता, समर्पण** इत्यादि । यही गुण उसके व्यक्तित्व को शोभायमान करते हैं।

यथा एक माँ के रूप में प्रदान की गई 'ममता' बच्चों के भविष्य का निर्धारण करती है। बच्चा अपनी माँ से ही दया, समर्पण, त्याग, ममता इत्यादि गुण सीखता है। अर्थात **मानव को मानव** बनाने में नारी के इस सौम्य रूप की ही महत्वपूर्ण भागीदारी है।

जहाँ पुरुष सिर्फ भौतिक- यात्रिंक स्तर पर अधिक चिंतन कर पाते है वहीं नारी भावनात्मक स्तर पर उतना ही चिंतन करने में सक्षम है और यही गुण उसकी सुंदरता बढ़ाता है।

यथा चंद्रमा की सुंदरता उसकी शीतलता में, फूलों की सुंदरता खुशबू में है उसी तरह नारी की सुंदरता भी उसके सौम्य गुणों में है। उसके बाह्य अलंकरण (आभूषण) से अधिक महत्व उसके सौम्य गुणों का है।

इसी तरह नारी का त्याग व समर्पण रूपी आभूषण भी उसकी सुंदरता में चार चाँद लगा देता है। वह अपने झूठे अभिमान को बीच में न लाकर त्याग व समर्पण द्वारा न केवल परिवार को अपितु पूरे समाज को बांधे रखती है। तभी तो उन्हें किसी भौतिक विज्ञान के सिद्धान्त अथवा आभूषणों की यांत्रिकता में बांधना कठिन है। वह तो भावनाओं की तरह ही स्वच्छंद है। इमैनुअल कांट के शब्दों में-

'मेरा ख्याल है कि महिलाएँ
सिद्धान्तों पर नहीं चल सकतीं ।
वे प्रधानतः अपनी भावनाओं
से संचालित होती हैं।'

इस तरह हमने जाना कि वास्तव में आभूषण नहीं बल्कि नारी के सौम्य गुण उसके सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। उसका मधुर स्वभाव, मधुर वाणी, त्याग, शील लज्जा दुनिया की इस कर्कशता में लावण्य का भाव पैदा करती है। और अपने इन्हीं गुणों के कारण विश्व में उसकी पूजा की जाती है। तभी तो भारतीय संस्कृति में नारी को **'देवी'** का दर्जा दिया गया है और कहा गया है-

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता॥''

अर्थात् जहाँ नारी का पूजा जाता है वहीं देवता का वास होता है।

हमने नारी के सौम्य गुणों को उसके सौन्दर्य के रूप में तो समझ लिया, परंतु सिर्फ किसी एक विचारधारा पर अपने दृष्टिकोण को केन्द्रित रखना हमारी समझ को संकीर्ण बना सकते हैं। सौम्य के साथ-साथ नारी का **'शक्ति-स्वरूप'** भी उसकी सुन्दरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हमे नारी की श्सौम्य रूप की कल्पना संबंधी मानसिकता के साथ-साथ उसके शक्ति स्वरूप की भी परिकल्पना करनी जरूरी है। जिसमे समर्पण के साथ- साथ साहस भी हो, सहनशीलता के साथ बेड़ियों को काट देने की स्वतंत्रता भी हो, ये गुण ही उसकी सुन्दरता को वास्तविक रूप में समग्रता से उभार पाएंगे। हमें उसकी कोमलता व सौम्यता को कमजोरी समझने की मानसिकता से निकलना होगा। तभी तो कहा गया

''कोमल है कमजोर नहीं तू,
शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली,
मौत भी तुझसे हारी है।''

जिस तरह किसी भी मनुष्य (पुरुष या नारी) के व्यक्तित्व की पहचान उसके बाहरी स्वरूप से नहीं होती। वैसे ही वास्तव में **नारी का सौंदर्य आभूषणों से नहीं, सौम्य गुणों से होता है।**

❑❑❑

6. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत

''समय चूँकि पुनि का पछताना
का बरखा जब कृषि सुखाना।''

तुलसीदास जी द्वारा रचित उपर्युक्त पक्तियाँ समय के महत्व व सामर्थ्य को बताती हैं। अर्थात किसी भी घटना/ स्थिति/व्यक्तित्व आदि का मूल्यांकन समय सापेक्ष होता है। यदि हम समय रह रहते किसी कार्य को नहीं करते तो सिवाय पछताने के हमारे पास कुछ शेष नहीं रहता ।

जिस तरह फसल पकने के समय उसकी उचित रखवाली न की जाए तथा तब सम्पूर्ण फसल समाप्ति के पश्चात, सिर्फ अफसोस करने के अलावा कुछ नहीं बचता उसी तरह किसी भी कार्य को उचित समय पर न करने के कारण हमें उसके दुष्परिणामों के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

हम निबंध को इसी परिप्रेक्ष्य में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विश्लेषित करने का प्रयास करेंगे। कि समय के दुरुपयोग के क्या दुष्परिणाम है? क्यों मनुष्य समय के महत्व को जानते हुए भी उसका उचित प्रयोग नही कर पाता? इस प्रवशत्ति को कैसे टाला जाए?

चूंकि समय मनुष्य के जीवन की सबसे मूल्यवान वस्तु है। एक बार वक्त बीत जाने पर वह कभी वापस नहीं आता । समय के महत्व को न समझने के कारण ही विभिन्न सभ्यता, समाज, प्रतिभा समाप्त हो गईं। क्योंकि उचित समय बीत जाने के पश्चात हमारे पास कुछ नहीं बचता। जिस तरह पूरे साल पढ़ाई न करने के बाद परीक्षा हॉल में सिवाय पछताने के अलावा कुछ नहीं मिलता, उसी तरह समय बीत जाने के बाद हाथ मलने के अलावा कुछ भी नहीं बचता। तभी तो कहा गया है–

''समय इंसान को सफल नहीं बनाता,
बल्कि समय का सही इस्तेमाल
इंसान को सफल बनाता है ।''

हमने यह तो जान लिया कि समय पर किसी कार्य करने का महत्व क्या है। परंतु यह पता होते हुए कि समय कितना महत्वपूर्ण है, मनुष्य इसकी बर्बादी क्यों करता है? समय की बर्बादी का सबसे बड़ा कारण है आलस्य। साथ ही किसी काम को 'कल' के लिए टाल देने की प्रवशत्ति। इसी कारण मनुष्य किसी कार्य उचित समय पर कर नहीं पाता और अंत मे सभी कार्य एक साथ आकर उसके बोझ व जोखिमों को बढ़ा देते हैं।

यथा वर्तमान में प्रदुषण की स्थिति हमारी प्रकृति को अनदेखा करने की, व भविष्य में निपटने की सोच के कारण ही है। IPCC की रिपोर्ट भी इन्हीं तथ्यों को उजागर करती है। कबीरदास के शब्दो में–

''काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ॥''

ऐसा ही उदाहरण हम वर्तमान में कोविड के भीषण प्रकोप के संदर्भ में भी देख सकते हैं। यदि समय रहते हमने अपनी अवसंरचना में उचित निवेश किया होता तो इसकी भीषणता को कम किया जा सकता था। वर्तमान में इसी संदर्भ को देखते हुए उचित कदम उठाए जा रहे हैं।

इसी तरह तालिबान का मुद्दा हो या आतंकवाद का, जलवायु परिवर्तन का मुद्दा हो या वैश्विक मंदी का सब कहीं न कहीं उचित समय पर कार्यवाही न करने के ही परिणाम हैं। शेक्सपीयर के शब्दों में–

''मैने समय को बर्बाद किया
और अब समय मुझे बर्बाद कर रहा है।''

हमने समय के महत्व, उसकी बर्बादी के के दुष्परिणाम व उसके बर्बादी कारणों को तो जान लिया। परंतु चिंतन का एक बिंदु यह भी है कि समय का उचित उपयोग कैसे किया जाए?

समय के सदुपयोग हेतु सर्वप्रथम हमे अनुशासित होकर नियमित रूप से अभ्यास करने की आवश्यकता है। साथ ही किसी कार्य को समय पर पूरा करने की प्रतिबद्धता रखना आवश्यकता है। पीटर ड्रकर के अनुसार 'समय सबसे कम पाया जाने वाला संसाधन है, और जब तक इसका अच्छा प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो बाकी किसी चीज का प्रबंधन नही किया जा सकता है।' अत: हमें अपने काम को 'कल' के लिए टालने की प्रवशत्ति से बचते हुए, अपनी प्राथमिकताओं को तय करके समय रहते सभी कार्यों को कर लेना चाहिए। जिस तरह प्रकृति में हर चीज (दिन-रात) की नियमितता है ठीक उसी तरह हमारे कार्य करने की प्रवशत्ति में भी नियमितता होनी चाहिए तथा उचित समय पर कार्य करने की तत्परता भी होनी चाहिए। ऐसा करने पर हमारे सामने पछताने की स्थिति उत्पन्न ही नहीं होगी। कबीरदास जी के ही शब्दों में-

''दु:ख में सुमिरन सब करे
सुख में करै न कोय''
जो सुख में सुमिरन करे
दु:ख काहे को होय ॥''

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि समय को बर्बाद करने के फलस्वरूप हमें पछताना पड़ता है वहीं समय का सदुपयोग हमें सफलता की सीढी चढ़ाता है। हमारी सफलता व कार्य पूरा होने की शर्त हमारे समय पर कार्य करने की प्रवृत्ति पर ही निर्भर है। महात्मा गांधी के शब्दों में -

''भविष्य इस बात पर निर्भर करता है,
कि आप आज क्या करते हैं।''

❑❑❑

7. छप्पर मरम्मत करने का समय तभी होता है, जब धूप खिली हुई हो। (The time to repair the roff is when the sun is shining.)

'दुख में सुमरिन सब करें
सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे
दु:ख काहे को होय।'

कबीरदास जी का उक्त दोहा किसी काम को समय रहते करने की महता को बताता है। किसी कार्य की सफलता उसे समय रहते किए जाने पर निर्भर करती है। जिस तरह छप्पर मरम्मत करने का समय भी तभी होता है, जब धूप खिली हुई हो न कि तब जब बारिश हो रही हो। क्योंकि बारिश/विपदा के समय मरम्मत करना उतना ही कठिन हो जाएगा।

हम निबंध को इसी परिप्रेक्ष्य में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे। कि कैसे किसी कार्य को समय रहते कर लेना चाहिए? क्योंकि विपदा के समय कार्य करने में सफलता नहीं मिलती? क्या कुछ कार्य विपदा/आपदा के दौरान भी जरूरी है।

सर्वप्रथम हम इन सवालों का विश्लेषण व्यक्तिगत स्तर पर करते हैं यथा एक व्यक्ति भविष्य की समस्याओं का उचित आकलन पहले करके उसकी तैयारी कर सकता है। वह उन सभी संसाधनों को भी उचित प्रबंधन कर सकता है जब धूप खिली हो अर्थात् जब परिस्थितियां अनुकूल हो। लेकिन वही जब परिस्थितियां विपरीत हो तब (अर्थात् जब बारिश हो) समस्या का प्रबंधन उचित तौर पर नहीं हो पाएगा, मानसिक स्तर पर तनाव के स्थिति उस स्थिति को संभालना कठिन होगा साथ ही उस समय मांग अनुरूप अन्य कार्यों को भी महत्व देना। अत: उचित परिस्थिति (धूप खिली) में ही छप्पर निर्माण आदि कार्य सम्पन्न हो सकता है। तभी तो आइंसटीन ने कहा-

''बुद्धिजीवी (Intellectual) समस्याओं का समाधान करते हैं, प्रतिभाशाली (geniuses) उससे बचाव का रास्ता खोजते हैं।''

इस तरह हम जानते हैं कि एक अच्छा नेता भी वही होता है जो उचित परिस्थिति के साथ अपने कार्य को करें। इसका उदाहरण ने मौर्यकाल से ले सकते हैं। घनानंद के अत्याचारों के विरूद्ध चाणक्य ने समय रहते चन्द्रगुप्त मौर्य को उचित प्रशिक्षण व मार्गदर्शन दिया व समय आने पर मौर्य वंश की स्थापना का पथ प्रदर्शन किया।

आधुनिक काल में भी हम इसी विचारशीलता का उदाहरण महात्मा गाँधी ने हर बड़े आंदोलन से पहले सभी को आंदोलन हेतु तैयार किया अर्थात् जब धूप खिली थी तब छप्पर का निर्माण किया ताकि जब आंदोलन रूपी बारिस हो तो सभी तैयार रह सकें। और अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति की रणनीति का सुचारू रूप से संचालन किया। **महात्मा गांधी के ही शब्दों में-**

'भविष्य इस बात पर निर्भर करता है आज क्या करते हैं।'

ऐसा ही उदाहरण भारत की आजादी के पश्चात भी देश सकते हैं। विभाजन की विभिषक पीड़ा के पश्चात जब भारत स्वतंत्रता के पथ पर बढ़ रहा था तब प्रारम्भ में सुरक्षा रूप छत की मरम्मत पर ध्यान नहीं दिया गया अर्थात् सुरक्षा ढांचे को मजबूत नहीं बनाया गया और इसी भूल का खमियाजा हमे 1962 के भारत-चीन युद्ध के रूप में उठाना पड़ा लेकिन इसी भूल से भारत ने सीख ली तथा उचित समय के साथ अपनी सुरक्षा रूप छत की मरम्मत की। इसी तैयारी के 1972 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारत को सफलता मिली। **राइफवाल्डो इमर्सन के शब्दों में-**

'जब बिल्कुल अंधकार होता है, तब इंसान सितारे देख पाता है'?

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी हम इसका उदाहरण देख सकते हैं। कोविड महामारी के प्रकोप के दौरान हमें हमारी स्वास्थ्य अवसंरचना मजबूत को बनाया गया होता है तो कोविड के प्रकोप को कुछ कम किया किया जा सकता था। हालांकि कोविड से सीख लेकर भातर में स्वास्थ्य अवसंरचना को मजबूत करने का प्रयास किया है।

इसी तरह जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में भी हमें इसी विचारधाारा पर कार्य करना होगा। तापमान को 21वीं. के अंत तक पेरिस लक्ष्यों 1.5 – 2°C वृद्धि तक बनाए रखने के लिए हमें अभी से कार्य करना होगा। IPCC की 6जी रिपोर्ट भी वर्तनमान से ही प्रयासों की आवश्यकता को दर्शाती है। अनुकूल परिस्थिति के साथ कार्य करना ही उचित सीख है। **कबीरदास जी के शब्दों में-**

''काल करे सो आज करें
आज करे सो अब।
पल में प्रलय होगी,
बहुरि करेगा कब॥''

इसी तरह भार में हर साल मुंबई, असम बाढ़ का सामना करते हैं व इस बाढ़ के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि मानसून से ही पहले ही समय रहते यदि उचित सरंचनात्मक व गैर सरंचनात्मक उपाय अपनाए जाए तो इन बाढ़ के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से हमने यह तो जान लिया कि अनुकूल परिस्थिति रहते हुए ही हमे तैयार रहना चाहिए। अब हम यह जानेंगे कि क्यों हम आपदा/समस्या/बारिश के समय छप्पर/समाधान निर्माण नहीं कर सकते।

चूंकि जब हम किसी आपदा के समय किसी समस्या को हम हम निकालते हैं तो हम उस शांति व गंभीरता से चिंतन नहीं कर पाते तथा निर्णय भी उचित तरीके से नहीं ले पाते। शांति व पक्ष-विपक्ष का उचित विश्लेषण ही उचित निर्णय करने में सहायता देता है। अनुकूल परिस्थिति बीत जाने के बाद यह कार्य उतना ही कठिन हो जाता है।

उदाहरण के रूप में आप स्वास्थ्यगत समस्याओं को ही ले लिजिए। कैंसर जेसे रोगों का यदि प्रारम्भिक अवस्था में निदान कर दिया जाए तो रोगी को बचाया जा सकता है, वही अत्यधिक देर होने पर समस्याएँ उतनी ही बढ़ती है।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। यह सही है कि छप्पर मरम्मत करने का सही समय तभी होता है जब धूप खिली हुई हो लेकिन हमें कुछ कार्य बारिश या आपदा के दौरान भी करने होते हैं।

यथा आपदा प्रबंधन में आपदा पूर्व के चरण की महत्ता होती है। परंतु आपदा के दौरान भी संकिर्ण निर्माण भी उतना ही जरूरी है। यथा आपदा के दौरान पहले किसे बचाएँ। राहत प्रयास कैसे अपनाएँ इसका निर्णय उस वक्त भी जरूरी है।

इसी तरह पुलिस तंत्र को हर परिस्थिति के लिए सुरक्षा तंत्र मजबूत बनाना होता है परन्तु यदि कोई घटना घटित होती है तो उस घटना के अनुरूप उसी समय निर्णय लेना होता है।

लेकिन उपरोक्त परिस्थितियों में भी पहले की गई तैयारियाँ सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अर्थात् धूप खिलने पर ही छप्पर का निर्माण सही रहता है। तभी तो कहा गया है-

''समय इंसान को सफल नहीं बनाता बल्कि समय का सही इस्तेमाल इंसान को सफल बनाता है।''

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

8. आप उसी नदी में दोबारा नहीं उतर सकते। (You cannot step twice in the same river)

''परिवर्तन ही संसार का नियम है''

गीता का यह उपदेश जीवन के शाश्वत सत्य को बताता है जो कि है 'परिवर्तन'। परिवर्तन ही है जो शाश्वत बना रहेगा। दुनिया में न केवल व्यक्ति अपितु हर प्राणी, वस्तु और तो और स्वयं ब्राह्मण्ड भी समय के साथ परिवर्तित हो जा रहा है तभी तो कहा गया है कि आप उसी नदी में दोबारा नहीं उतर सकते।

क्योंकि जब आप दुबारा उस नदी में प्रवेश करते हैं तो आप न आप वो व्यक्ति रहते हैं जो पहले था ना ही वो नदी समान रहती है। अत: शाब्दिक अर्थ भी यही परिवर्तन के नियम को बताता है।

निबंध में हम इन्हीं पक्षों का विश्लेषण करेंगे कि कैसे हर समय हर आयाम में परिवर्तन होता है, क्यों परिवर्तन जरूरी है? क्या यह समान या और बेहतर हो सकता है?

सर्वप्रथम हम व्यक्ति विशेष के जीवन चक्र पर गौर करते हैं व्यक्ति अपने जीवन में में बालअवस्था से लेकर वृद्धावस्था तक का सफर पूरा करता है और अपनी हर अवस्था में वह पुराने अनुभवों व नई परिस्थितियों से सीखकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है अत: हर स्थिति के साथ व्यक्ति में भी परिवर्तन होता है। **गोपालदास नीरज जी के शब्दों में-**

'जीवन पीछे को नहीं आगे बढ़ता नित्य, नहीं पुरातन से कभी सजे नया साहित्य'

व्यक्ति के साथ-साथ उसके मूल्यों व संबंधों में परिवर्तन आता है। वह अपने आस-पास के वातावरण से सीख कर अपने मूल्यों का विकास करता है। साथ ही अपने रिश्तों में बदलाव का अनुभव करता है। और वो रिश्तें जिनमें एक बार परिवर्तन आ जाता है, पुन: वैसे ही रूप में ले लें यह संभव नहीं होता। रहीम जी के शब्दों में-

''रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे पे फिर न जुड़े, जुड़े गाँठ परि जाए॥''

व्यक्ति विशेष के आयाम के पश्चात हम अन्य आयामों पर गौर करेंगे।

ऐतिहासिक संदर्भ में देखें तो प्राचीन काल से आधुनिक काल तक निरंतर परिवर्तन देखने को मिला है। सभ्यताओं के विकास से लेकर विभिन्न राजवंशों के काल तक निरन्तर में भी परिवर्तन आया है। शासन व्यवस्था में भी बदलाव आया है। आज शासन के उन नियमों को नहीं अपनाया जा सकता। राजवंश से लोकतंत्र तक का सफर निरंतर परिवर्तन के कारण ही संभव हो पाया है।

इसी तरह राजनीति के संदर्भ में देखें तो हमारे राजनीतिक मूल्य हमेशा एक जैसे नहीं रह सकते। उनमें भी निरंतर परिवर्तन होता है तभी तो भारतीय संविधान एक जीवंत दस्तावेज है। समय के साथ विभिन्न संशोधनों के माध्यम से स्वयं को परिवर्तित किया है। और तो ओर जनता की अपेक्षाओं में भी परिवर्तन आया है। जहाँ प्रारम्भ में मांगे रोटी, कपड़ा व मकान तक सीमित थी आज यह इंटरनेट का अधिकार, निजता का अधिकार जैसे कई पहलुओं को शामिल कर रही है।

इस तरह अर्थव्यवस्था के संदर्भ में भी देखें तो हम उन नियमों को आज लागू नहीं कर सकते जो आज से 50 साल पहले अर्थव्यवस्था के लिए सही थे। अर्थव्यवस्था में भी समय के साथ परिवर्तन आया है। समाजवाद से पूंजीवाद, पूंजीवाद व उदारीकरण से कोविड के समय सरंक्षणवाद समय के साथ हुए अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को ही दर्शाता है। **गोरख पांडेय के शब्दों में-**

''समय का पहिया चले रे साथी
समय का पहिया चले
फौलादी घोड़ों की गति से
आग बरफ में जले रे साथी
समय का पहिया चले''

इसी तरह सुरक्षा संबंधी आयामों में भी परिवर्तन आया है। स्थल-जल-वायु युद्ध के पश्चात आज हम चौथी पीढ़ी के युद्ध के दुनिया में परिवेश कर चुके हैं। अत: सुरक्षा संबंधी आयाम व हमारी प्रतिक्रिया भी एक समान नहीं हो सकती। साइबर युग के समय में हमें अपनी तैयारी में परिवर्तन जरूरी है।

अत: उपरोक्त उदाहरणों से हमने जाना है कि समय के साथ हर वस्तु/व्यक्ति/घटना में परिवर्तन होता है? समय के साथ दो चीजें कभी एकसमान नहीं रह सकती।

अब हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि परिवर्तन क्यों आवश्यक है?

अगर परिवर्तन न हो तो क्या होगा? निबंध के ही संदर्भ में ही देखें तो अगर नहीं में निरन्तर परिवर्तन न हो, अर्थात् यदि नहीं में बहाव न हो, ओर वह ठहर जाए तो उसका अस्तित्व बनाए रखने के लिए निरंतर परिवर्तित होना आवश्यक है।

यथा कोविड-19 के दौरान हमने अपनी दिनचर्या, काम करने के तरीकों में परिवर्तन लाया जो कि आवश्यक था। दोनों समय (कोविड

पहले व बाद) परिस्थितियाँ एक समान नहीं हो सकती है अत: अत: परिवर्तन आवश्यक है।

सुजाना के अर्सली के शब्दों में-

''अतीत हमें सिखा सकता है, हमारा पोषण कर सकता है, लेकिन यह हमें बनाए नहीं रख सकता। जीवन का सार परिवर्तन है, और हमेशा आगे बढ़ना चाहिए अन्यथा आत्मा मुरझाकर मर जाएगी।

इस तरह हमने जाना कि क्यों परिवर्तन आवश्यक है। लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। यह सत्य है कि हम उसी नदी में दोबारा नहीं उतर सकते लेकिन अगर उचित प्रयास के साथ पुन: नदी में उतरने को प्रयास जरूर कर सकते हैं। यथा यदि किसी कार्य में हमे सफलता नहीं मिलती तो हार न मानकर पुन: प्रयास करके हमे उस कार्य को पुन: करके देखना चाहिए अर्थात् पुन: नदी में प्रवेश करना चाहिए चाहे परिस्थितियाँ बदल चुकी हो। क्योंकि सही कहा गया है-

'करत-करत अभ्यास के जड़िमत होत सुजान',

इसी तरह समय के साथ कुछ चीजें शाश्वत बनी रहती है यथा अपने बच्चों के माता का प्यार, समय के साथ सुधार के प्रवृति ये ऐसे आयाम है जो निरंतर बने रहते हैं।

अत: उपर्युक्त विश्लेषण से हमने जाना कि परिस्थितियाँ कभी भी एक समान नहीं रहती है। अत: हमे भूत या भविष्य पर चितंन न करके वर्तमान में जीना चाहिए तथा माँग अनुरूप स्वयं में बेहतर परिवर्तन का प्रयास करना चाहिए। **कबीरदास जी के शब्दों में-**

''कहना था सो कह चले,
अब कुछ कहा न जाए।
एक रहा दूजा गया,
दरिया लहर समाए।''

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

9. हर असंमजस के लिए मुस्कराहट ही चुनिंदा साधन है। (A smile is the chosen vehical for all ambiguities)

महाभारत में जब युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हो रहा था तब श्रीकृष्ण और शिशुपाल दोनों उपस्थित थे। शिशुपाल श्रीकृष्ण को दिए जाने वाले सम्मानको देख न सका और उन्हे अपशब्द कहने लगा। इसके विपरीत श्रीकृष्ण ने अपना धीरज न खोकर, चेहरे पर मुस्कारहट को नाए रखा तथा अपने मन्तव्य को जाहिर न होने दिया। शिशुपाल को 100 गलतियों को वो एक मुस्कारहट के साथ माफ करते रहे तथा अंत में अति होने पर शिशुपाल का वध किया।

उपर्युक्त उद्धरण हमें किसी स्थिति कैसे व्यवहार करना है, यह सीख देता है। कैसे हम अपने मनोभावों को अपने चेहरे पर न दिखाकर एक मुस्काराहट के साथ हर असमंजसता को जवाब देना है क्योंकि हर असंमजस के लिए मुस्काराहट ही चुनिंदा साधन है।

इस निबंध में हम निम्न पक्षों का विश्लेषण करेंगे। कैसे मुस्काराहट हर असमंजस के लिए एक चुनिंदा साधन का काम करती है? क्या यह अन्य समस्याओं का हल भी देती है? किन परिस्थितियों में मुस्कराहट उचित साधन नहीं है?

व्यक्तिगत स्तर पर हम उदाहरण लें तो हम कई बार ऐसी परिस्थितियों में होते हैं कि हम अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं कर पाते। कई बार ऐसी परिस्थितियाँ भी होती है कि हमें हमारे सवालों का जवाब नहीं मिलता। साथ ही कई बार हम अपने विचारों द्वारा दूसरों को निराश भी नहीं करना चाहते। इन सभी असमंजसता का एक ही हल होता है 'मुस्कराहट'। एक विनम्र मुस्कान हमारे अधीरता, भय, असमजंसता को छुपाने में सफल होती है। तभी तो कहा गया है-

'तुम जो इतना मुस्करा रहे हो
क्या गम है जिसको छुपा रहे हो'

व्यक्तिविशेष के स्तर के साथ-साथ मुस्कान उन्य आयामों में भी सहायता प्रदान करती है।

उदाहरणतया जब एक सिविल सेवक सार्वजनिक सेवा में कार्य कर रहा होता है तो विभिन्न चुनौतियों के दौरान उस अतिउत्साहित अथवा घबराना नहीं चाहिए बल्कि एक विनम्र मुस्कान के साथ जनता के साथ सहयोग करना चाहिए। जनता द्वारा उठाए गए सवालों पर गुस्सा न दिखाकर एक मुस्काराहट से निर्णय लिया जाना चाहिए।

इसी तरह विभिन्न कुटनीतिज्ञ किन्ही दो पक्षों में से किसी एक पर अधिक बल न देकर एक मुस्कारहट को चुनते है अपनी असमजंस्ता की स्थिति में।

यहाँ यह बात महत्वपूर्ण है कि यह मुस्कराहट किसी भी पक्ष को ठेस नहीं पहुंचाती साथ ही उचित निर्णय लेने में समय भी प्रदान करती है।

ऐसा ही उदाहरण हम चिकित्सकों के व्यवहार में भी देखते हैं। रोगी के साथ व्यवहार में भी देखते हैं। रोगी के साथ व्यवहार में चिकित्सक एक विनम्र मुसकान बनाकर रखता है तो रोगी अतिभयभीत होने से बचता है। तथा चिकित्सक भी अपनी मुस्कराहट क्षरा इस गंभीरता में एक सकरात्मक वातावरण बनाने में सफल होता है।

इसी तरह भारत ने जब अपना 'परमाणु परीक्षण' किया तो उसका नाम 'स्माइलिंग बुद्धा' रखा। यहाँ यह उन सभी सवालों का जवाब था जो यह पूछते थे कि भारत की सुरक्षा व रक्षा नीति क्या होगी? यहाँ उनकी 'स्माइलिंग बुद्धा' की छवि हर देश को अपने अनुसार अर्थ निकालने हेतु सहीज था।

इस तरह हमने जाने की जब हम असमंजसता की स्थिति में होते हैं। तो 'मुस्कारहट' सभी प्रश्नों का हल देने व उचित सकारात्मक वातावरण निर्माण करने तथा अपनी हीन भावना व अतिउत्साह में एक धीरज लाने को उचित साधन साबित होती है।

हमने यह तो जान लिया कि मुस्कराहट हर असमंजस स्थिति के लिए चुनिंदा साधन है। लेकिन यह भी जानना भी आवश्यक है कि यह अन्य समस्याओं के हल में भी सहायक है।

मुस्कराहट द्वारा हम दूसरों की भी सहायता कर सकते हैं साथ ही स्वयं के जीवन में एक सकारात्मक ऊर्जा का विकास कर सकते हैं यह हर विपरीत परिस्थिति में सतुंष्टि का भाव प्रदान करती है। राजकपूर जी की फिल्म 'अनारी' के एक की निम्न पंक्तियाँ जीवन के सर को बताती है-

''किसीकी मुस्कराहटों पे हो निसार,
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार,
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार
जीना इसी का नाम है....''

इस तरह जीवन में मुस्कराहट हर उस आनंद को प्रदान करती है जो जीवन का सार है। हम किसी परिचित से भी मिलते हैं तो एक मुस्कराहट से उसका अभिवादान करते हैं यह हमारी भावनाओं को ही व्यक्त करती है।

जब भी हम किसी विकट परिस्थति में होते हैं और यदि चुनौतियों से डरते है तब यही मुस्कराहट हमें आगे बढ़ने को हौसला देती है।

इस तरह हमने जाना कि मुस्कारहट न केवल असमंजसता की स्थिति में अपितु अन्य समस्याओं का हल भी है।

परन्तु विचार करने योग्य एक पक्ष यह भी है हर परिस्थिति में मुस्कराहट उचित नहीं है। यथा जब हम किसी असमंजस या विपरीत परिस्थति में होते है तथा दु:खी अनुभव करते है उसी समय हम जब अपने किसी नजदीकी दोस्त या माता-पिता से अपने विचार साझा करते हैं तो हमें अपने भावनाओं को एक झूठी मुस्कान के साथ न छुपाकर उचित गंभीरता के साथ अपने दु:खों को साझा करता चाहिए।

अर्थात् हमें वहाँ अपनी असमंजसता दिखाना चाहिए।

इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है मुस्कराहट परिस्थिति के अनुरूप होनी चाहिए चयह अभद्र न होकर विनम्र होनी चाहिए।

इस तरह उपर्युक्त विश्लेषण से हमने जाना कि कैसे समस्याओं को हल करने में व असमंजसता की स्थिति मुस्कराहट एक उचित साधन के रूप में प्रयुक्त होती है। साथ ही हमे यह निरन्तर कार्य हेतु प्रेरित भी करती है। सही कहा गया है-

''सीख ली जिसने अदा मुस्कारने की,
उसे क्या मिटाएगी गर्दिशें जमाने की।''

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

10. 'केवल इसलिए कि आपके पास विकल्प है, इसका अर्थ कदापि नहीं कि उनमें से किसी को भी ठीक होना ही होगा'

(Just because you have a choice, it does not mean that any of them has to be right.)

''इधर कुआँ तो उधर खाई''।

दैनिक जीवन में यह मुहावरा हमने न जाने कितनी बार सुना होगा। लेकिन अगर गौर से विचार करें तो यह अपने में जीवन के कटु सत्य को भी छुपाए है। वह है विकल्पों के संबंध में सत्य है।

हमारे जीवन में कई बार मुश्किलें आती है। हमें उन मुश्किल घड़ी में निर्णय भी लेना होता है तथा उपलब्ध विकल्पों में से चुनना होता है लेकिन उपलब्ध विकल्प हमेशा सही हो ये आवश्यक नहीं है।

इस निबंध में हम विकल्पों की उपस्थिति व उनके चुनाव के संबंध में विश्लेषण करेंगे। क्या उपलब्ध विकल्प हमेशा सही होते हैं? यदि नहीं तो ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? क्या विकल्पों होना आवश्यक है? विकल्पों को मूल्याकंन किस आधार पर हो?

सर्वप्रथम हम विकल्पों के सही या गलत होने पर विश्लेषण करेंगे। कई बार हमारे सामने विकल्प होते हैं लेकिन हमें उन पर आंख मूंदकर सही या गलत का चुनाव नहीं करना चाहिए क्योंकि संभव है कि सभी विकल्प ही गलत हो। हमारा ज्ञान या खोज उस संदर्भ में परिपूर्ण ही न हो। अथवा जो आज सही प्रतीत हो रहा भविष्य में नई खोज होने पर गलत साबिल हो सकता है।

उदाहरणतया किसे एक कैदी से यह पूछना कि वह फांसी पर मरना चाहता है या गोली खाकर। कहने को तो कैदी के पास विकल्प है लेकिन यह विकल्प के नाम पर उसका उपहास मात्र है।

इसी तरह एक सकुंचित समाज में उपलब्ध विकल्प वास्तविक न होकर आभासी होते हैं यथा स्त्रियों व दलितों के समक्ष कई उपलब्ध विकल्प भी उचित नहीं होते।

इसी तरह उपलब्ध विकल्प परिपूर्ण हो यह भी आवश्यक नहीं है। क्योंकि संभव है कि भविष्य में एक उचित समाधान मिल सके।

हमने यह तो जान लिया कि हमेशा उपलब्ध विकल्प सही हो यह आवश्यक नहीं है परंतु अगर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो तो क्या किया जाना चाहिए।

चूंकि किसी एक अच्छी या बुरे में से किसी एक का चुनाव आसान होता है लेकिन किन्हीं दो बुरों में से एक का चुनाव उतना ही कठिन होता है ऐसे में 'नैतिक द्वन्द्व' की स्थिति उत्पन्न होती है।

अत: ऐसी स्थिति में व्यक्ति हमेशा सर्वप्रथम आकलन करना चाहिए। उसे सर्वप्रथम यह जांचना चाहिए कि उपलब्ध विकल्प सच में सही है क्या? अगर नहीं है तो उन्हे पर्याप्त या अंतिम विकल्प नहीं माना जाना चाहिए तथा सदैव नए हेतु तत्पर रहना चाहिए।

यथा शीत युद्ध के दौरान भारत के पास USSR गुट व USA गुट में शामिल होने के दो विकल्प थे। लेकिन किसी एक में भी शामिल होना भारत के लिए सही नहीं था अर्थात् उपलब्ध दोनों विकल्प गलत थे। अत: भारत ने उस परिस्थिति का उचित मूल्यांकन किया व किसी भी एक को न चुनकर 'गुट निरपेक्षता' को अपनाया।

इसी तरह भारत के सामने कई बार सवाल उठते है कि स्पेस रिसर्च व रक्षा में अत्यधिक खर्च न करके गरीबी के मुद्दों पर खर्च को बढ़ाना चाहिए परंतु वर्तमान में दोनों पर ध्यान देना आवश्यक है अत: इन दोनों में से सिर्फ एक विकल्प चुन लेना भविष्य के लिए भूल साबित हो सकती है।

इसी तरह कई बार सभी विकल्प गलत होने पर हम नए खोज को भी ढूंढते हैं। यदि T.N. शेषन ने उपस्थिति परिस्थतियों को ही अपना लिया होता है तो वो चुनाव क्षेत्र में नवाचार नहीं कर पाते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण से हम कह सकते हैं हमें हमारी शकांलू प्रवर्ति को बनाए रखना चाहिए तथा उचित परीक्षण किया जाना चाहिए। परीक्षण द्वारा तया किया जाना चाहिए कि उपलब्ध विकल्प सही है या नहीं। **कार्ल पॉपर के शब्दों में**-

जब भी आपकों लग कि एकमात्र सही सिद्धांत है तो मान लें कि आपने न तो सिद्धांत समझा है और न ही उस समस्या को जिसका हल खोज जा रहा था।

उपर्युक्त विश्लेषण से हमने परीक्षण या मूल्यांकन के महत्व को भी जाना परंतु यह भी रोचक है कि मूल्यांकन भी सही हो यह आवश्यक नहीं। क्योंकि जो व्यक्ति के संदर्भ में सही है वो आवश्यक नहीं समाज के संदर्भ में सही हो। सही व गलत की अवधारणा भी देश-काल-वातावरण के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है। अत: हमारे द्वारा चुने गए विकल्प की किसी अन्य परिप्रेक्ष्य में गलत होने की संभावना भी बनी रहती है।

उपरोक्त विश्लेषण से हमने यह तो जान लिया कि उपलब्ध विकल्प से सभी सही हो यह आवश्यक नहीं तो फिर मन में यह सवाल उठता है कि क्या फिर विकल्पों का होना जरूरी है?

इस प्रश्न का उत्तर हम रूसों की स्वतंत्रता व कांट की सकंल्प की स्वतंत्रता की अवधारणा से पा सकते हैं। चूंकि विकल्प की उपस्थिति की स्वतंत्रता है। अधिक विकल्प हमे अधिक सोचने के आयाम प्रदान करते हैं।

इसके साथ ही विकल्पों की उपस्थिति व्यक्ति को उत्तरदायी ठहराने के लिए भी आवश्यक है। अन्यथा हर व्यक्ति अपने गलत कार्य को यह कहकर तर्कसंगत बना सकता है कि उसके पास विकल्प नहीं थे। अत: हम यह जान लिया कि विकल्पों का होना जरूरी है। परन्तु विकल्पों को होना ही काफी नहीं है।

विकल्पों के होने के साथ विकल्प परिपूर्ण हो यह भी जरूरी है। साथ ही यदि विकल्प परिपूर्ण न हो तो हमे अपनी परीक्षण शक्ति द्वारा सदैव नए विकल्प हेतु प्रयासरत रहना चाहिए। साथ ही गलत या सही की चिंता न करके अपने कर्त्तव्य को पूरा करना चाहिए।

अर्जुन द्वारा महाभारत में परिवार व युद्ध में से एक के चुनाव पर श्रीकृष्ण की 'कर्त्तव्य के चुनाव' की सलाह का पालन करना चाहिए।

अत: विकल्पों की परिधि, में स्वयं की समिति न करके निरन्तर नए हेतु प्रयासरत रहने चाहिए क्योंकि उपलब्ध विकल्प सही थे यह आवश्यक नहीं। इसी प्रयासरतता के संदर्भ में **राल्फ वाल्डो एमर्सन ने कहा है-**

'कोई भी महान व्यक्ति अवसरों की कमी के बारे में शिकायत नहीं करता।'

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

11. आर्थिक समृद्धि हासिल करने में वन सर्वोत्तम प्रतिमान होते हैं। (Forest are the best case studies for economic excellence.)

'अपने आपको प्रकृति की गोद में सौंप कर हम अपने हर सवालों का जवाब पा सकते हैं' - अज्ञात

वनों के आर्थिक-सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व से आज पूरा विश्व भलीभांति परिचित हैं। वह हमारी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन कई बार यह सवाल उठता है कि 'क्या अर्थव्यवस्था में वनों से सीखकर कुछ सुधार लाए जा सकते हैं? क्या वर्तमान आर्थिक समस्याओं का हल वनों की प्रक्रिया-कार्यप्रणाली को देखकर निकाला जा सकता है? क्या आर्थिक समृद्धि हासिल करने में वन सर्वोत्तम प्रतिमान (Cast Study) होते हैं।

इन सवालों को जवाब जानने के लिए हमें वनों की कार्यप्रणाली को समझना होगा साथ ही उसके विभिन्न नियमों को जानना होगा जिनका प्रयोग हम अर्थव्यवस्था में कर सकते हैं।

ऐसा ही एक नियम है 'योग्यतम की उत्तरजीवीता' (Survival of fittest) जिस तरह उद्‌विकास की प्रणाली में योग्य जीव/प्रजाति/ पौध े की अपना अस्तित्व बना पाते है। वैसे ही अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पध ीं कंम्पनीयाँ ही अस्तित्व रख पाएगी। अत: आवश्यकता है कि समय के साथ आए परिवर्तन के अनुरूप कंपनियाँ खुद को अनुकूल बनाएँ।

इसी तरह वनों को गहन अध्ययन करें तो हम पाएँगें कि 'खाद्य-जाल' व 'खाद्य श्रृंखला' के रूप में सब घटक परस्पर जुड़ा है। 'पौधों से लेकर अपघटक तक तथा अपघटक से पुन: पौधों तक' एक खाद्य जाल होता होता है अर्थात् 'अपशिष्ट पुर्नचक्रण'। वनों की इस विशेषता का प्रयोग आज हम 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' अपशिष्ट प्रबंधन में कर सकते हैं।

इसी तरह वनों का एक अनूठा नियम है 'सहभागिता'। 'चीटीयों का पत्तों के साथ सहभागिता हो या मधुमक्खियों' का फूलों के साथ संबंध या फिर विभिन्न 'लत्ताओं का पेड़ों के साथ' यहाँ सभी जीव एक दूसरे को लाभ पहुँचाते है। सहभागिता का प्रयोग अर्थव्यवस्था में सहकारिता के रूप में किया जा सकता है। आज सहकारिता द्वारा वंचित वर्गों व क्षेत्रों की भागीदारी अर्थव्यवस्था में सुनिश्चित की जा सकती है।

अर्थात् 'एक सबके लिए, सब एक लिए' की भावना हो तो 'सहकार' से समृद्धि तक पहुंचा जा सकता है।

सभी की भागीदारी की चर्चा के साथ ही हम पाते हैं कि आज भी अर्थव्यवस्था में जनसंख्या 50: भाग की समुचित भागीदारी नहीं है। अर्थात् 'नारी सहभागिता'। लेकिन वनों से हम नारी के नेतृत्व व भागीदारी के महत्व को सीख सकते हैं। 'हथीनी द्वारा समूह को नेतृत्व हो या रानी मधुमक्खी की भूमिका' ये उदाहरण में अर्थव्यवस्था में लिंग समावेशिता लाने हेतु प्रेरित कर सकते हैं। इस संबंध में **मलाला युसुफजई का कथन सटीक बैठता है-**

'हम तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक हममें आधे हमसे पीछे हों।'

इसी संदर्भ में आगे विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि वन समय के साथ स्वयं में परिवर्तन भी करते हैं। जिस तरह ऋतु में परिवर्तन होता है वनों में 'पतझड़-बसंत' का आगमन होता है अर्थात् समय के साथ परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन।

इस परिवर्तन से हम अर्थव्यवस्था हेतु सीख ले सकते है कि मंदी या तेजी के दौरान अर्थव्यवस्था में किस तरह परिवर्तन लाना है, विभिन्न दरों को मंदी व तेजी के दौरान किस तरह परिवर्तन करना है ताकि संतुलन बना रहे।

इसी तरह परिवर्तन के साथ-साथ वन स्वयं को आपदा के प्रति भी सुदृढ़ बनाकर रखते है उदाहरणतया 'मैंग्रोव वन'। आपदा के प्रति अर्थव्यवस्था को सरंचनात्मक रूप से मजबूत व तैयार रखना, इस दिशा में एक प्रतिमान ही है।

वनों के संदर्भ में ओर अध्ययन करें तो हम पाते है वनों का एक मुख्य गुण है 'लचीलापन'। पारिस्थतिक असंतुलन की स्थिति में पारितंत्र अपने मौलिक चक्रों यथा 'नाइट्रोजन चक्र, ऑक्सीजन चक्र' इत्यादि में परिवर्तन कर संतुलन को बनाता है। इसी प्रकार अर्थव्यवस्था में भी आर्थिक समस्याओं से पुन: रिकवरी करने की क्षमता होनी चाहिए। हाल ही में कोविड के पश्चात् अर्थव्यवस्था में धीरे-धीरे पुन: संतुलन आना इसी का उदाहरण है।

वनों की स्थिरता के लिए उत्तरदायी एक घटक 'विविधता' भी है। वनों में जैव विविधता जितनी अधिक होगा वनों का स्थायित्व उतना अधिक होता है। इसी प्रकार अर्थव्यवस्था में विविधता को होना भी उतना ही आवश्यक है।

सभी क्षेत्रों की उचित भागीदारी अत्यंत आवश्यक है यथा तेल आधारित अर्थव्यवस्था का संकट में आना किसी एक क्षेत्र पर निर्भरता को ही दर्शाता है। इसी तरह आपूर्ति श्रृंखला में विविधता भी वर्तमान समय की आवश्कता को दर्शाता है।

स्थिरता बनाने रखने के लिए सततता व सरंक्षण की आवश्यकता होती है। इसका उदाहरण भी हम पारिस्थतिकी से प्राप्त कर सकते हैं,

यथा ध्रुवीय भालू, सर्दियों के समय 'शीत निष्क्रयता' (Hybernation) में चला जाता है उसी तरह एक कंपनी को भी किसी आकस्मिक घटना व भविष्य हेतु अपने संसाधनों को सरंक्षित रखना चाहिए।

सतत् विकास की अवधारणा भी यही है कि हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए भी संसाधनों का संरक्षण कर सकें।

इसी तरह अर्थव्यवस्था में अपने अनुभवों को याद रखने की भी आवश्यकता है जैसा कि 'हाथी समूह' अपनी यात्रा के अनुभावों को लम्बे समय याद रखता है। अर्थव्यवस्था में यह विभिन्न समस्या के हल निकालने में कारगर साबित हो सकता है। अर्थव्यवस्था के संबंध में विचार का एक पक्ष यह भी है कि अन्य अर्थव्यवस्थाओं के आक्रमण/प्रभाव से किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था व घरेलू उद्योगों को कैसे सुरक्षित रखा जाए।

जिस तरह विदेशी आक्रमक प्रजातियों (Invasive Species) का पारितंत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, उसी तरह अनावश्यक डंपिग का भी घरेलू अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है अत: उचित टैरिफ प्रणाली बनाए रखना आवश्यक है।

इस प्रकार विभिन्न उदहारणों की सहायता से हमने जाना कि चाहे वन सरंक्षण हो या अर्थव्यवस्था समृद्धि, दोनों के लिए अपनाए जाने वाले तरीके समान ही हैं। साथ ही ये एक दूसरे पर निर्भर भी है कि वनों का भी सरंक्षण हो। सिर्फ आर्थिक विकास, सतत विकास की प्राप्ति संभव नहीं हो पाएगी। अत: समावेशी विकास हेतु आवश्यक है कि हम वनों के सरंक्षण के साथ-साथ उनसे सीखें। इस संबंध में **'लियो टॉलस्टाय' का कथन सटीक बैठता है-**

'प्रसन्नता की पहली शर्तों में से एक यह है कि मनुष्य व प्रकृति के बीच की कड़ी न टूटे'

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

12. कवि संसार के अनधिकृत रूप से मान्य विधायक होते हैं। (Poets are the unacknowledged legislators of the world.)

'प्रतिबद्ध हूँ, संबंद्ध हूँ, आबद्ध हूँ'
प्रतिबद्ध हूँ जी हाँ प्रतिबद्ध हूँ-

बहुजन समाज की अनुपल प्रगति की निमित्त संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ अविवेक भीड़ की 'भेड़या-धसान' के खिलाफ अंध बधिर 'व्यक्तियों' को सही राह बतलाने के लिए.....

'प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, शतधा प्रतिबद्ध हूँ।'

कवि नागार्जुन की कविता के यह अंश एक कवि की समाज के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। समाज के सभी वर्गों के प्रति प्रतिबद्धता व अपने लेखन से सामाजिक मुद्दों पर कटाक्ष व सलाह देकर कवि अपनी प्रतिबद्धता पूरी करने हैं। किसी भी समाज की स्थिति को वहाँ के साहित्य में आंका जा सकता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में हम जानेंगें कि क्यों कवियों को संसार के अनधि कृत रूप से मान्य विधायक माना जाता है। विधायक व कवि में कौन सी समानाताएँ होती है? कवियों का कार्यक्षेत्र व महत्व क्या है? उनकी इतिहास से वर्तमान तक कैसे समाज का विधायक के रूप में प्रतिनिधि त्व किया है?

सर्वप्रथम हम कवियों को संसार का अनधिकृत विधायक क्यों माना जाता है यह जानेगें। इसके लिए हमे विधायक के कार्य व अर्थ को जानना होगा।

विधायक जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं जो सामाजिक नियमों दिशा-निर्देशों का निर्माण करते है जिन पर समाज का संचालन होता है। वे सामाजिक मुद्दों व जनता की आवाज को उठाते हैं व उनका हल निकालने हेतु प्रयासरत रहते हैं।

इसी तरह कवियों की भी समाज में यही भूमिका होती है। कवि भी जनता व सामाजिक समस्याओं को अपनी रचनाओं में लिखते हैं। वे न केवल जनता की आवाज उठाते हैं अपितु उनका समाधान भी प्रदान करते हैं। हालांकि इनका चुनाव जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नहीं किया जाता है। परन्तु इनका कार्य कमोबेश विधायक जैसा ही होता है या यूँ कहें उनसे भी बढ़कर। इसीलिए इन्हें 'अनधिकृत विधायक' की संज्ञा दी जाती है। तभी तो कहा गया है-

''राजनीति जब डगमगाने लगती है, तो साहित्य ही उसे सहायरा देता है।''

वस्तुत: ये पक्तियाँ उस असीम आत्मविश्वास को बताती है जब कभी किसी देश पर संकट हो तो उसका समाधान सिर्फ राजनीति में ही नहीं साहित्य में भी है।

किसी भ देश काल वातावरण में जब भी कोई किसी रचना का सृजन करता है तो उस रचना में वह उस समय के तात्मकालिक यर्थाथ का वर्णन करता है व सम्पूर्ण इतिहास व कार्यकारण को बताता है।

उदाहरणतया पश्चिमी जगत के रूसो, शेक्सपीयर, लोर्का, रॉबर्ट फ्रास्ट जैसे कवियों ने अपनी कृतियों में न केवल सामाजिक व तत्कालीन समस्याओं को बताया अपितु उनका हल भी दिया।

भारत में इसी तरह का उदाहरण भारतीय साहित्यों के रचियता वेदव्यास, तमिल, तेलुगु कवि पंपा, पौत्र, बंगाली कवि चैतन्य महाप्रभु, मराठी कवि तुकाराम उर्दू कवि गालिब की रचनाओं में मिलता है।

भक्तिकाल के कबीर से लेकर तुलसी तक, 'नानक' से लेकर 'जायसी' तक सभी ने अपने समय की सामाजिक समस्याओं को उठाया। यथा सामाजिक व्यवस्था पर कबीर कटाक्ष करते हुए कहते हैं-

'जाति न पूछो साधु की, पूछ लिजिए ज्ञान।
मोल करे तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान'

इसी तरह आधुनिक काल में भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, निराला व दिनकर जैसे कवियों ने न केवल औपनिवेशिक शोष को बुरा बताया अपितु उसके हल व आदर्श समाज के गठन का मार्गदर्शन भी दिया। यथा भारतेन्दु हरिशचंन्द्र ने अपनी कविता में अंग्रेजों पर गंभीर चोट करते हुए कहा कि-

'अंग्रेज राज-सुख साज सजे भारी।
पै धन विदेश चलि जाते इहै अति ख्वारी।।'

वर्तमान में भी जब नए-नए विमर्शों की चर्चा होती है तो वर्तमान की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का जिक्र होता है। इसी बीच आज के कवि अपनी रचना से जनता की समस्या को रखते हैं जो पुन: एक विधायक का कार्य है।

आज जब नारी विमर्श की चर्चा होती है तो हम पाते हैं कि जहाँ एक तरफ विधायकों ने एक तरफ विधायकों ने एक तरफ इस हेतु विभिन्न कानूनों का निर्माण किया तो दूसरी तरफ कवियों ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं के मुद्दों को उठाया। बात चाहे वैश्विक स्तर पर 'सिमोन द बुआर' की रचनाओं की हो या भारत में महादेवी वर्मा, निर्मला पुतुल की हो सभी ने स्त्रियों के अधिकार की वकालत की है-

'तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गाँठे खोलकर
कभी पढ़ा है तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास'

इसी तरह किसानों की दशा हो या गरीबों की मजबूरी, कवियों की लेखनी ने उनके मर्म को भी उचित रूप से उजागर किया है। इसका यथार्थ उदहारण प्रेमचंद के 'गोदान' में देखा जा सकता है। तुलसी के काव्य में भी अकाल, खेती की समरू, गरीबी, कर व्यवस्था, ऋण आदि के मुद्दे दिखायी देते हैं यथा-

''खेती न किसान को, भिखारी को न भीख,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी
जिविका विहीन लोग सीघमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों, 'कहाँ जाई, का करी?''

इस तरह कवियों ने ने केवल सामजिक कुरीतियों पर आवाज उठाई अपितु राजनीतिक समस्याओं को भी भली-भांति उठाया। 'भ्रष्टाचार' राजनीति का अपराधीकरण भाई-भतीजावाद आदि को उचित रूप अपनी रचनाओं के माध्यम से गलत बताया। मन्नू भंडारी 'महाभोज' इसी का उदहारण है।

इसी तरह आर्थिक समस्याओं व एक शास के कार्यों का मार्गदर्शन भी हमें कवियों से मिलता है। 'कौटिल्य' का अर्थव्यवस्था इसी तरह का उदाहरण है। उन्ही के शब्दों में-

'प्रजा सुखे संखं राज्ञ, प्रजानां तु हिते हितम्
नात्म प्रिय हिंत राज्ञ, प्रजानां तु प्रियं हितम्'

इस प्रकार हमने जाना कि कवि जनता की सामजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं के प्रति आवाज उठाते है व उनका हल निकालते हैं। जो उन्हें विधायक के समाचीन वड़ा कर देती है। परंतु एक चीज जो उन्हें विधायक का से अधिक विस्तृत क्षेत्र प्रदान करती है वह है। मानसिक स्तरश पर भी समस्याओं का समाधान? कृषि की कृतियाँ सामाजिक स्तर के साथ-साथ मानसिक स्तर पर हल प्रदान करती है। यथा-

साहित्य आपको भौतिक सुख भले ना प्रदान कर पाए किंतु यह आपको आंतरिक शांति अवश्य प्रदान कर सकता है।

इस तरह कवियों ने जनता का मार्गदर्शन प्रदान किया। साथ ही अन्य कवियों को उनके उत्तरदायित्व का अहसास बोध भी करवाया। एक कवि को सिर्फ काल्पनिक मनोरंजन मे न वोकर यर्थाथ पर चिंतन भी करना चाहिए। मैथिलीशरण जी इसी संदर्भ में मार्गदर्शन करते कहते हैं-

'मनोरंजन न कवि कर्म होना चाहिए।
उसमे उचित उपदेश का मर्म होना चाहिए।'

इस तरह उचित विश्लेषण के सार के रूप में हम कह सकते हैं कि कवि ने समाज के विधायक के रूप मे इतिहास से लेकर वर्तमान तक समाज की पैरवी की है। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होने विधयकों से भी विस्तृत क्षेत्र का बयान किया है तभी कहा कहा है-

'जहाँ न पहुँचे रवि,
वहाँ पहुंचे कवि॥

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

13. इतिहास वैज्ञानिक मनुष्य के रुमानी मनुष्य पर विजय हासिल करने का एक सिलसिला है।' (History won is a series of victories won by the scientific man over the romantic man)

इतिहास को सभी विषयों की जननी कहा जाता है। क्योंकि मौटे तौर पर इतिहास उसी अतीत का ज्ञान है जो व्यापक रूप में भौतिक जगत से लेकर सम्पूर्ण प्राणी जगत से संबंधित कार्यों का ज्ञान प्रदान करता हो। इस संदर्भ में 'डेन ब्राउन' का एक प्रसिद्ध कथन यह भी है कि ''इतिहास विजेताओं द्वारा लिवा जाता है'' । सामान्यतया यह माना इसकी जाता है कि एक विजेता वो होता है जो कल्पना व यथार्थ में से यथार्थ अर्थात् वैज्ञानिक वास्तविकता को चुनता है। इस तरह वैज्ञानिक मनुष्य तक का सफर ही इतिहास है।

इस निबंध में हम जानेंगे कि कैसे इतिहास रुमानी मनुष्य पर वैज्ञानिक मनुष्य के विजय हासिल करने की कहानी है? रुमानी मनुष्य व वैज्ञानिक मनुष्य में क्या अंतर है? क्यों अंतत वैज्ञानिक मनुष्य की विजय होती है इतिहास रचा जाता है।

सर्वप्रथम हम रुमानी मनुष्य की विशेषताओं को जानने का प्रयाप्त करेंगे। रूमानी मनुष्य वह होता है जो यथथि को न देखकर हमेशा कल्पना में खोया रहता है। जो तर्कों पर विश्वास न करके अपनी कल्पना में अधिक विश्वास करता है। जो सपने तो जरूर देवता है लेकिन उन्हें पूरा करने की क्षमता नही रख पाता ।

दूसरी तरफ वैज्ञानिक मनुष्य किसी भी कार्य को करने से पहले यथास्थिति व तर्कों का विश्लेषण करता है। तत्पश्चात दृढनिश्चय से युक्त होकर कार्य करता है। साथ कार्य के दौरान आई रुकावट को किसी अलौकिक शक्ति से न जोड़कर तर्कों से जोड़ता है व उसका हल निकालता है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण वह रुमानी मनुष्य पर विजय प्राप्त करने में सफलता हासिल करता है। तभी कहा गया है-

'कुछ लोग है जो वक्त के साँचों में ढल गए।
कुछ लोग है जो वक्त के साँचों को बदल गए।'

निबंध का विश्लेषण उचित रूप करने के लिए हम इतिहास के कुछ उदाहरणों से इसका सत्यापन करने का प्रयास करेंगे।

एथेंस के प्राचीन दार्शनिक सुकरात उन्ही वैज्ञानिक मनुष्य में से एक थे। उस समय एथेंस समाज अंधविश्ववासों से जकड़ा था। तब सुकरात ने अपने तर्कों से उनका वंडन किया। इसके चलते उन पर युवाओं को गुमराह करने व धर्मपरायणहीनता का आरोप लगा। और तो और अंत में उनको जहर का प्याला पीना पड़ा । लेकिन रुचिकर बात यह कि अपने तार्किक सोच के कारण सुकरात आज भी विचारों के कारण जिंदा है। यह उनकी उन सभी रूमानियत व उस समय के लोगों पर विजय ही है।

ऐसा ही उदाहरण भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी देवा जा सकता है। जब भारतीय समाज अस्पृश्यता, वर्ण-व्यवस्था जैसी कुप्रथा से जकड़ गया था तथा अंधविश्वास हर जगह फैल रहा था तब गौत्तम बुद्ध ने अपने तर्कों से इसका वंडन किया व इसी ने मे समाज सुधार को प्रेरित किया।

मध्यकाल में तो इसके अनेकों उदाहरण देवे जा सकते है। जब रजिया सुल्तान बनी तभी महिला होने के कारण उनका विरोध हुआ परंतु अपनी उचित कुटनीति व साहस के कारण वह उत्तराधिकार पाने में सफल रही।

इसी तरह का उदाहरण पानीपत-1 के युद्ध में भी देखा जा सकता है। जहाँ एक तरफ लोदी वंश दुनिया जीत लेने व अपने सैन्य बल अधि क होने के कारण कल्पना के सागर में खोए हुए थे साथ बाबर को कमतर आँक रहे थे। बाबर ने इसी अवसर का लाभ लेते हुए अपनी तुलुगम पद्धति व उचित रणनीति से युद्ध को अपने पक्ष में करके जीत हासिल की। ऐसा ही उदाहरण प्लासी व बक्सर के युद्ध में देवने को मिलता है। अग्रेंजो को महज एक व्यापारिक कंपनी समझ कर कमतर आँकने व यथथि का ज्ञान न होने के कारण ही 3 राजाओं की संयुक्त फौज अग्रेजों के समक्ष हार गए। यहाँ कल्पना व रुमानियत मे वोए रहना व यर्थाथ विश्लेषण न कर पाना ही हार का मुख्य कारण था।

मध्यकाल से आधुनिक काल से बढ़ने के पर हम पाते हैं कि अंग्रेजों ने भारतीयों नस्ल आधार पर नीचा बताकर उनके आत्मविश्वास को तोड़ना चाहा। लेकिन विवेकानंद, महात्मा गांधी, राजा राममोहन राय लाला लाजपतराय जैसे सुधारकों ने अपने वैज्ञानिक सोच व तर्कों से उनका खंडन किया और भारतीयो मे स्वतंत्रता व स्वराज के सपने के बीज को बोया । यह उनका साहस, दृढनिश्चय व तार्किक सोच का ही परिणाम। था। महात्मा गांधी के ही शब्दों में-

''जिस काम को करने में डर लगता है उसको करने को नाम साहस है। मुट्ठीभर सकंल्पवान लोग, जिनकी अपनी लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा बदल सकते हैं।''

इस तरह हमने जाना कि वैज्ञानिक मनुष्य किसी पर आश्रित न

होकर अपने चिंतन व दृढ़निश्चय को आधार बनाता है व यथास्थिति से अनजान रहता है व निर्णय लेने में अपने तर्कों को आधार न बनाकर अपने विश्वास व कल्पना को आधार बनाता है। अर्थशास्त्र में भी राजा को कल्पना में न रहकर 'शाम, दाम, दण्ड-भेद' की नीति को अपनाने को कहा गया है।

इसी तार्किक सोच का उदाहरण आधुनिक काल बाबासाहेब अम्बेडकर का भी मिलता है। इन्होंने सामाजिक कुरीतियों को नियति न समझकर अपने तर्कों से इनका वंडन किया से चले आ रहे अंधविश्वास को तोड़ा। इसी संदर्भ में निम्न ज्ञान पक्तियाँ उचित बैठती है।

किसी की चार दिन की जिंदगी सौ काम करती है।

किमी की सौ बरस की जिंदगी में नही हो पाता

❑❑❑

वैश्विक इतिहास में रूमानी मनुष्य पर वैज्ञानिक मनुष्य की जीत को अनेक उदाहरण मिल जाएगें। लेनिका के साम्यवाद के साफल न हो पाने के पीछे उसका रुमानी (रोमांटिस्थिम) ही था। वहाँ साम्यवाद सिर्फ पेपर मे ही बचा रह गया था व यथार्थ का ज्ञान न हो पाना ही उसकी असफलता का कारण बना।

इस तरह इतिहास के विभिन्न उदाहरणों से हमने जाना कि इतिहास वास्तव में वैज्ञानिक मनुष्य के रुमानी मनुष्य पर विजय पाने का सिलसिला है और यह कालवंड मे स्वयं को दोहराता रहा है व वर्तमान मे भी अनवरत रूप से जारी है। इस जीत का कारण ही यर्थाथ का कारण पीढीयों से चले आ रहे अधिश कुरीति को तोड़ना है व उस कल्पना पर यथथि का विजय पाना है तभी तो कहा गया है-

''लीक लीक गाड़ी चले,

लीक ही चले करत ।

लीक छोड़ तीन चलें,

शायर, सिंहं सपूत ॥ ''

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

14. जहाज बंदरगाह के भीतर सुरक्षित होता है, परंतु इसके लिए तो वह होता नहीं है। (A ship in harbor is safe, but that is not what ships are built for)

बात महाभारत की है, कौरवों की सेना ने द्रोणाचार्य के नेतृत्व में चक्रव्यूह का निर्माण किया। वीर अभिमन्यू उसमें प्रवेश करना तो जानता था लेकिन बाहर निकलना नही जानता था। वह चाहता तो अपने परिजनों का इंतजार कर चक्रव्यूह से पीछे मुड़ सकता था लेकिन फिर भी उसने अपने कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए प्रवेश करने का निर्णय किया व युद्ध मे अपना योगदान देते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। यहाँ अभिमन्यु ने सुरक्षा को न चुनकर अपने कर्तव्य को चुना क्योंकि यही उनके अस्तित्व का कारण था।

इसी तरह एक जहाज भी बंदरगाह के भीतर सुरक्षित होता है परंतु इसके लिए तो वह होता नही है। बल्कि वह तो होता तुफानों और लहरोंण से लड़कर समुन्द्र को पार करने के लिए। विपरीत परिस्थिति में भी हर राह को पार करने के लिए। सार यह है कि हर वस्तु, मानव विचार का एक उद्देश्य होता है जिसके लिए वह बना होता है उसे अपनी सुरक्षा अपेक्षा अपने उद्देश्य की पूर्ति पर केन्द्रित होना चाहिए।

उदाहरणतया राजकुल में जन्मे गौतम बुद्ध चाहते तो अपना जीवन भोगविलास व राजकीय ऐशोआराम में बिता सकते थे परंतु उन्होने दुसरा रास्ता चुना जिसके लिए उनका जन्म हुआ था वह लोगों का मार्गदर्शन किया। सच ही कहा गया है-

''असल जिंदगी की आपके शुरुआत आराम स्थान (कम्फर्ट जोन) से निकलकर ही होती है''।

इसी तरह बैरिस्टर के रूप में बाबा साहेब अम्बेडकर चाहते तो अपना जीवन में एक आरामदायक शैली अपना सकते थे लेकिन उन्होने दलितों को न्याय दिलाने का संकल्प लिया व अंतत स्वतंत्रता व समानता वाले 'संविधान' का निर्माण किया। क्योंकि भारत के 'संविध ान जनक' की भूमिका के लिए ही उन्होने अपनी सुरक्षा की अपेक्षा इस राह को चुना।

इसी तरह महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, भगत सिंह, सुभाषचंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू आदि से स्वतंत्रता सेनानियों ने अनेक कष्टों को सहकर भारतीय स्वतंत्रता पाने अपना योगदान दिया। सरदार वल्लभ्भाई पटेल के ही शब्दो में -

''यह सच है कि पानी में तैरनेवाले ही डूबते हैं, किनारे पर खड़े रहने वाले नहीं, मगर ऐसे लोग कभी तैरना भी नही सीव पाते। ''

विश्लेषण को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देवने का प्रयास करें तो हम अनेको उदाहरण पाते हैं।

यथा हाल ही पूरा विश्व कोरोना महामारी से ग्रस्त था। सभी लोग घरों में थे व सुरक्षित रहने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन इसी महामारी के दौरान विभिन्न डॉक्टर्स, नर्स, पुलिसकर्मी ने अपनी जान की परवाह किए बिना अपने कर्त्तव्यों को पूर्ति की व कोरोना को हराने मे अपना योगदान दिया । वे चाहते हो अपने घरों में सुरक्षित रह सकते थे लेकिन इसके लिए वो नही बने थे। वो बने थे मानवता की सेवा के लिए। तभी आज उन्हें 'हीरोज ऑफ द वर्ल्ड व कोरोना वारियर्स की संज्ञा दी जाती है। **विसेंट वॉन गॉग के शब्दों में** -

''दुनिया में काम करने के लिए आदमी को अपने भीतर मरना पड़ता है। आपने इस दुनिया में सिर्फ खुश होने नहीं आया है । वह पूरी मानवता के लिए महान चीजें बनाने को आया है। दुनिया में वह उदारता प्राप्त करने आया है और देने भी।''

इसी तरह महिलाओं के परिप्रेक्ष्य मे देखें तो एक समय था जब महिलाओं को घर से बाहर निकलना उचित नहीं समझा जाता था। ना ही उन्हें शिक्षा का अधिकार था ना ही सम्पति का। परन्तु आज महिलाएँ हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभा रही है। वह भी आज एक जहाज की आने वाली लहरों व तुफानों से रही है। हाल ही में NDA (सेना) मे महिलाओं की सैन्य भर्ती भी इसी का उदाहरण है जिस क्षेत्र को कभी महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं माना गया, आज उसी क्षेत्र में महिलाएँ अपना परचम दिवा रही है।

''कोमल है कमजोर नहीं तु, शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली,
मौत भी तुझसे हारी है। ''

सेना के परिप्रेक्ष्य में विचार करें तो के समय अगर एक सैनिक वुद सुरक्षित रवना चाहे तो वह पीछे हट सकता है परंतु उसके लिए वह बना नही होता। उसका अस्तित्व तो होता है अपनी अंतिम साँस तक युद्ध में डटे रहने के लिए व मौका मिले तो देश के खातिर प्राण न्यौछावर करने के लिए। यहाँ उसका कर्त्तव्य उसे यह करने की प्रेरणा देता है। **नेहरू जी के शब्दों में**-

''अपने को संकट मे डालकर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है। कायरों की नहीं ''

संकट में खुद को डालकर इतिहास में भी कई राजाओं ने अपना नाम अमर किया है। यथा जब अलेक्जेंडर अपने विश्व विजेता बनने के अभियान पर निकला था। तब उसने भारत की तरफ भी कूच किया था। उसी समय उसका सामना झेलम के समीप राजा पोरस से हुआ।

पोरस की सेना अलेक्जेंडर के समीप काफी छोटी थी परंतु फिर भी उसने लड़ने का निश्चय किया। युद्ध में पोरस की हार हुई परंतु अलेक्जेंडर पोरस की वीरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसका राज्य उसे वापिस प्रदान कर दिया। तभी तो कहा गया है-

''लहरों से डरकर नौका पार नही होती

कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती।

हमने हर (वस्तु, मनुष्य) जहाज की उपयोगिता को तो विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से जान लिया । परंतु हर सिक्के के दो पहलू होते है। अत: यह सच है कि जोखिम लेने की क्षमता आवश्यक है परंतु सुरक्षा की भावना भी उतनी ही जरुरी है। एक जहाज पर लावों रुपए वर्च करके उसका निर्माण किया जाता है अत: उसके संसाधन की सुरक्षा भी आवश्यक है।

उदाहरणतया कोई देश अपनी अर्थव्यवस्था मे उदारीकरण व निजीकरण को बढ़ावा देता है जैसे भारत ने 1991 के सुधारों के समय दिया। परंतु आवश्यकता पड़ने पर वह अपने घरेलू उद्योगों व अर्थव्यवस्था में संतुलन बनाए रवने हेतु सुरक्षात्मक उपाय (टैरिफ व नॉन टैरिफ बैरियर्स) भी अपनाता है। यहाँ जोखिम व सुरक्षा में उचित तालमेल होना आवश्यक है।

इस संदर्भ में हम कह सकते हैं, कि किस समय जहाज को बंदरगाह मे रखना है व किस समय जोखिम लेना विश्लेषण है यह उचित विश्लेषण के बाद निर्धारित करना चाहिए। सुरक्षा के बिना वैसे ही अर्थहीन हैं जैसे जोखिम के बिना सुरक्षा। अत: मध्यममार्ग अपनाते हुए एक संतुलित राह की आवश्यकता है

''अति का भला न बोलना,

अति की भली न चूप।

अति का भला न बरसना

आते की भली न धूप।।''

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR